S.J.N. Public School

Sub - Hindi | Class - 10th | अध्यापक - श्याम सिंह
प्रकरण - रस | मो. नं. - 9026647288

रस → रस का शाब्दिक अर्थ है "आनन्द" कविता कहानी उपन्यास आदि को पढ़ने एंव नाटक को देखने से जिस आनन्द की अनुभूति होती है, उसे रस कहते है।

=) रस को काव्य की आत्मा माना जाता है।

=) रस की परिभाषा : —

1- वाक्यम् रसात्मकम् काव्यम् – विश्वनाथ

=) भरतमुनि ने अपनी पुस्तक 'नाट्यशास्त्र' मे रस की परिभाषा इस प्रकार की है " विभावानुभाव व्यभिचारि संयोगाद्रस निष्पत्ति ।" अर्थात् - विभाव, अनुभाव तथा व्यभिचारी भावों के संयोग से रस की उत्पत्ति होती है।

=) 'नाट्यशास्त्र' मे 36 अध्याय है।

=) रस का उल्लेख 'अथर्ववेद' में मिलता है।

=) रस का उल्लेख 'तैत्तरीयोपनिषद' में होता है।

रस के अंग

रस के चार अंग होते है :– (1) स्थायी भाव (2) विभाव (3) अनुभाव (4) संचारी भाव / व्यभिचारी भाव

1- स्थायी भाव =) जो भाव मन में अत्यधिक समय तक रहकर उसे तन्मय कर देते है, वे स्थायी भाव कहलाते है। स्थायी भाव नौ माने गये है। वात्सल्य नाम का दसवाँ स्थायी भाव भी स्वीकार किया गया है। प्रत्येक रस का अपना एक स्थायी भाव होता है।

रस के नाम	स्थायी भाव	रस के नाम	स्थायी भाव
श्रृंगार	रति / प्रेम	भयानक	भय
हास्य	हास	वीभत्स	जुगुप्सा
करुण	शोक	अद्भुत	विस्मय
वीर	उत्साह	शान्त	निर्वेद / शम
रौद्र	क्रोध	वात्सल्य	वात्सल्य
		भक्ति रस	भगवत विषयक

2020.05.12 07:15